

# सत्य साहित्य

वर्ष 9/ अंक 3  
अप्रैल 2026  
Year 9/ No. 3  
April  
2026

सत्य साहित्य, श्री रामशरणम् इन्टरनेशनल सेन्टर, नई दिल्ली की एक त्रैमासिक पत्रिका

हे शनि बन्धु, कनका सिन्धु पार करे मेरी नैया।

- ① रात, सन्धेरी, सुजाब नदी, सुभे  
मन भरेके सौँर रात है सुभे  
रात थिरकाये, कनैहया -- हे शनि --
- ② गहरा जात है, इर किनारा, मोह माया का जात है सारा।  
पार कनकाये, कनैहया -- हे शनि --
- ③ रानी सौँरी, मिठा उला,  
इक से सगवत सुभे नर साये,  
रात थिरकाये, कनैहया -- हे शनि --
- ④ कल मीठ सुनत भई साये,  
इपार हो सुभे हो, प्रपना बनाये,  
मक के उभुं कनैहया -- पार करे --

(परम पूजनीय महाराज जी की डायरी से)



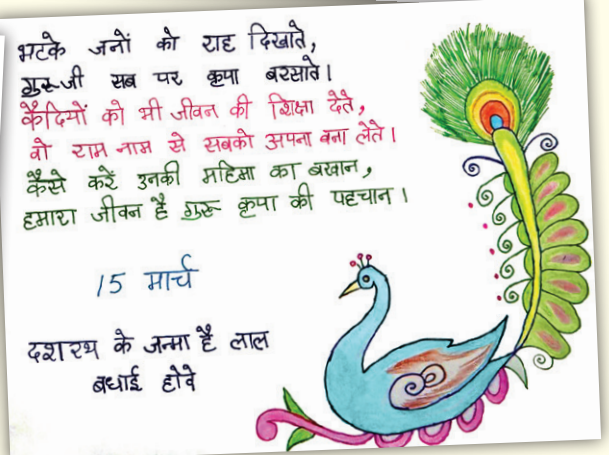
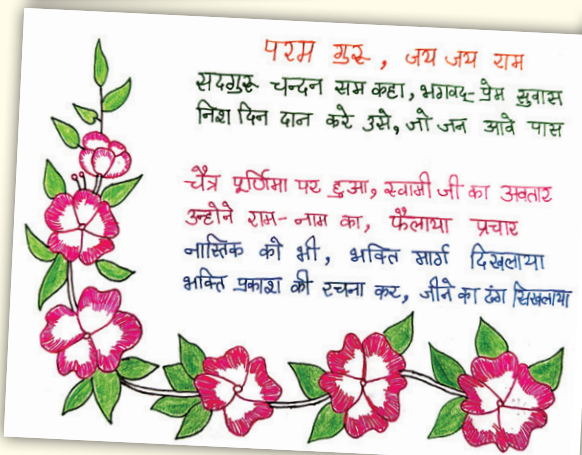
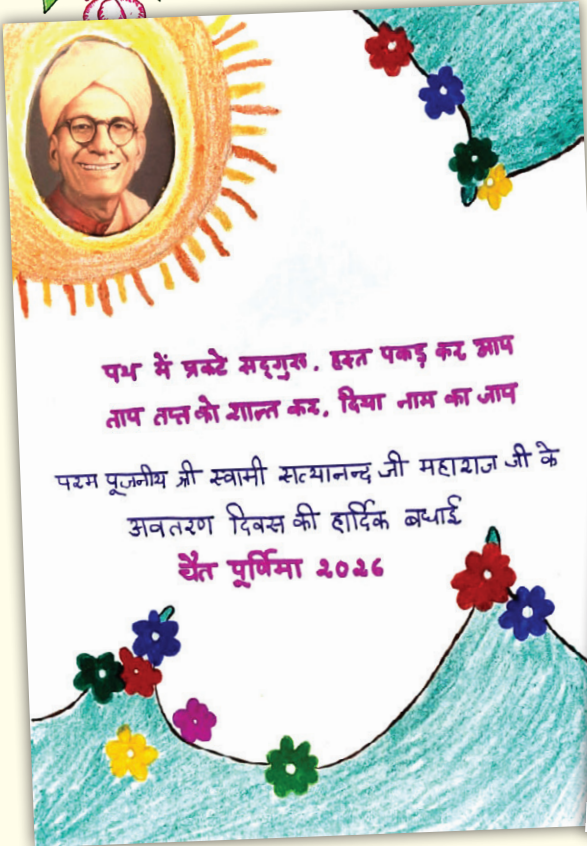
## इस अंक में पढ़िए

- अवतरण दिवस की बधाई
- The State of the Mind in Meditation
- भजन का समय निश्चित हो
- मन का मौन : साधना का लक्ष्य
- श्रीरामशरणम् एक ऐतिहासिक विवरण  
— पलवल
- आप बीती
- विभिन्न केन्द्रों से
- कैलेन्डर
- बच्चों के लिए

सत्य साहित्य

मूल्य (Price) ₹5

# बधाई



# The State of the Mind in Meditation

## सत्यानन्द

Many seekers think that by restraining the mind it will stop, but by restraining it, it becomes even more restless. The real thing is to loosen it. By this, it becomes peaceful on its own. The practical, worldly mind should be ignored. This awakens the inner self. Just as by thinking about sleep, sleep does not come—rather, by relaxing the feelings, sleep comes quickly. In the same way, by excessively thinking, “My mind should become steady,” the mind becomes even more restless. There should be more discernment, not strain. The path of God’s grace is not the path of surrounding or cornering the mind. In this, the mind should be relaxed; it should be ignored. One should understand: “I am meditating on the Name.” The wandering of the mind here and there should be regarded as of no consequence. The work that happens naturally is better than work done with forceful effort. Wind creates waves in water. In the same way, the awakening of the inner mind and the calming of the practical mind produce the joy of the mind. The mind can never be made joyful by force.

The signs of the awakening of inner spiritual power and the descent of God’s grace are: falling of the body, trembling, joy, involuntary laughter, sweating, and hair standing on end. These signs do not appear in everyone. In some, one sign appears; in others, another. In



kirtan there should be looseness, meaning the movements that happen should not be stopped. These should be allowed to happen (in spiritual practice gatherings and satsangs).

*Sadhana Satsang, Hoshiarpur, Date: 4.12.1950.  
Pravchan Piyush, excerpt from p.142 ■*

# भजन का समय निश्चित हो

प्रेम



जैसे कोई अपने काम काज पर नियत समय पर जाता है भगवद् भजन का समय भी निश्चित होना चाहिए और फिर इस समय को टालना नहीं चाहिए। महाराज (स्वामी जी) कहा करते कोई किसी के बुलाने पर आए और बुलाने वाला बात न करे तो इज्जतदार आदमी फिर नहीं जाएगा। इसी प्रकार भजन का समय जो बाँधा उस समय कहीं जाना ठीक नहीं। समय ऐसा बाँधें जिसमें विघ्न की सम्भावना न पड़े। भजन किसी हालत में न टले। एक बार स्वामी जी को डॉ. ने समय दिया तो महाराज ने कहा आज ध्यान पहले कर लें क्योंकि डॉ. ने आना है। जैसे दफ्तर में देरी करना अच्छा नहीं लगता इसी तरह परमेश्वर के दरबार में भी बड़ी भावना के साथ समय पर जाना बड़ा आवश्यक है। भजन के समय कोई मिलने वाला आए तो क्षमा माँग लें। इस समय को टालने से हानि होती है। प्रथम स्थान राम को। इसे गौण न बनाएं। आसन भी निश्चित और स्थान भी, समय भी। फिर परमेश्वर की कृपा अपार होगी। इस बात का निश्चय रखिए। प्रभु राम तेरी कृपा हो, कृपा हो।

परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज के श्रीमुख वाक्य, 27.03.72, परम पूजनीय श्री महाराज जी की डायरी से ■

# मन का मौन : साधना का लक्ष्य

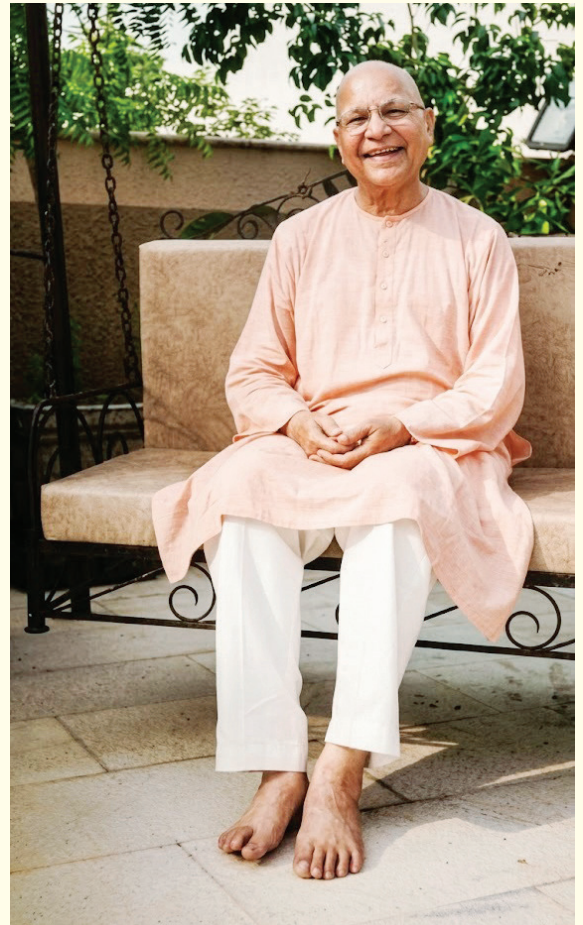
१०२५।७७।

मनोमिथ्या की प्रकृति तथा अपात्र मन में सुखाने पर सब कुछ सुख्य जाता है और मिथ्या पर सब कुछ विनाश जाता है। अतः वेदों में परमेश्वर के प्राणियों—मन का नाम है—मेरा मन केन्द्राण करी संकल्पितं योग्यं कर्तुं। मन विहितं = सुख के लिए उद्योगपूर्ण हो जाना है, मर्मा अन्तः-मान के लिए तन्मय हो जाना है, वेदों परमात्मा से साक्षात्प्राप्त होकर मन में समर्थ हो जाना है। अतः मन का संकल्प, प्रकृतिक विनाश पर ही सुख है। इति आत्मसं के ज्ञाने पञ्चब्रह्मस्य का एक अनुभव साधने में अन्तःसाक्षात्कार विहित मन = सुख्य मन में ही संकल्प, राम के वाक्यमय अर्थगदित करने की वाक्य लालसा एवं सामर्थ्य को मनोयोग कहा गया है। योग्य मन की उदात्त परिणति, योग्य मन हो जाता है, मन से नहीं। अतः मन का अन्तःकरण की शुद्धि

Manonigraha (control of the mind)—its importance and means: When the mind is reformed, everything becomes right; when it is corrupted, everything goes wrong. Therefore, in the Vedas, one prays to the Supreme Lord—‘May my mind be auspicious; may it be filled with spiritually elevating resolves.’ When the mind becomes pure and spotless, it naturally turns upward. Only then does it become ready to receive Self-knowledge and capable of establishing oneness with the Supreme Soul. A steady mind, by its very nature, becomes attached to the Lord—this is a principal means of God-realization. The direct experience of God is possible only in a purified and cleansed mind. The intense longing and capacity to establish oneness with Ram is called manoyoga (yoga of the mind). Yoga is the highest refinement of the mind. Yoga is achieved through the mind, not through the body. Through renunciation of impurities and purification of the inner being.

मन को किस प्रकार से मौन किया जा सके। मन को मौन करना ही सब प्रकार की साधनाओं का कर्मफल है।

संत तिलोका के पास एक विद्वान जाते हैं, विद्वान तार्किक हैं, उनके मन में अनेक प्रश्न हैं, जहाँ कहीं भी मौका मिलता है अपने प्रश्नों का पिटारा सबके सामने खोल देते हैं। सन्तोषजनक उत्तर नहीं मिलते इसलिए असंतुष्ट हैं। संत के बारे में बहुत सुना हुआ है कि वे बहुत उच्च कोटि के विद्वान हैं और कोई ऐसा प्रश्न नहीं जिसका इनके पास उत्तर नहीं है। बहुत आशा लेकर विद्वान महाविद्वान शाब्दिक विद्वान के पास गए हैं। जा कर प्रणाम किया है और श्री चरणों में बैठ गए हैं और कहा, “मेरे बहुत से प्रश्न हैं मैं उनका उत्तर ढूँढने, खोजने के लिए, पाने के लिए आप के पास आया हूँ, मेरे ऊपर कृपा कीजिए। मेरे मन के अनेक संशयों का निवारण करें।” संत तिलोका कहते हैं, “आपके सभी प्रश्नों का उत्तर मेरे पास है। मैं सभी का उत्तर देने को तैयार हूँ क्या कीमत चुकाओगे?” विद्वान को लगा, इनके पास उत्तर हैं तभी मुझ से इतने यकीन से कीमत माँग रहे हैं। सोच विचार कर के कहा, “हाँ देने को तैयार हूँ। आप



जो कहेंगे मैं सब करने को तैयार हूँ पर मेरे प्रश्नों का उत्तर दीजिएगा।" तिलोका को भी लगा जिज्ञासा तो मन में है ही तभी कुछ भी कीमत देने को तैयार है। तिलोका ने कहा, "पुनः सोच लो कीमत बहुत भी हो सकती है।" विद्वान ने कहा, "मैं कुछ भी देने को तैयार हूँ।" "ठीक है, आप दो वर्ष मेरे पास रहिए, किसी प्रकार का संकट आए, कोई आवश्यकता हो, कोई संदेश कहीं से आए, कोई समस्या जीवन की आए, कोई शारीरिक रोग आए, आपको अपना मुख दो साल के लिए नहीं खोलना। चुपचाप मेरे पास बैठे रहिए, आप की सुखसुविधा की पूर्ण व्यवस्था हुई हुई है। आपको अच्छा भोजन समय पर मिलता रहेगा, आपको कुछ भी माँगने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। सब कुछ अपने आप होता चला जाएगा बस इतनी ही शर्त है कि आप को अपना मुख दो वर्ष के लिए नहीं खोलना है।" विद्वान ने प्रणाम किया, "ठीक है महाराज ऐसा ही होगा।"

संत महात्मा तिलोका अपने काम में लगे रहते, ये अपने काम में लगे रहते। मौन रहना कोई छोटा काम नहीं, बहुत बड़ी साधना है। मौन को सन्तों महात्माओं ने साधना का ही नाम दिया है, मौन रहना कोई छोटी बात नहीं है, उच्च बात है। जिनको चुप रहने का अभ्यास नहीं और उनको चुप रहने के लिए कहा जाए तो तनिक उनसे पूछ कर देखो कि कितनी कठिनाई उनके सामने उपस्थित होती है। It is very very difficult – चुप रहना। तार्किकों को, विद्वानों को ये होता भी है कि अपना प्रदर्शन करने के लिए जानबूझ के किसी से बात करेंगे ताकि वो सिद्ध कर सकें कि वे उत्कृष्ट हैं। ये विद्वत्ता के कुछेक बड़े भारी नुकसान हैं। विद्वत्ता इसी प्रकार से उत्कृष्टता देती है। कभी चर्चा का विषय हो, न भी हो लेकिन वे कुछ न कुछ चर्चा छेड़ देते हैं ताकि वह सिद्ध कर सकें कि वह उत्कृष्ट हैं, उनके पास विद्वत्ता बहुत है।

इस बेचारे को चुप रहना पड़ रहा है, पर वायदा कर चुके हैं कि महात्मा के साथ दो वर्ष तक चुप रहेंगे। भीतर से विचार धीरे-धीरे, धीरे-धीरे बंद होने शुरू हो गए हैं, इतना भी याद नहीं कि सोमवार है या शुक्रवार, पौष का मास है या चैत्र। एक वर्ष बीत गया है या डेढ़ वर्ष, विचारों की धारा बंद हो गई है। संत महात्मा को पूरा हिसाब-किताब है। जैसे ही अवधि समाप्त हुई संत इनके पास गए हैं कहा, "आज दो वर्ष पूरे होने जा रहे हैं, आपके मन में जो प्रश्न हैं, जितने भी प्रश्न हैं, मेहरबानी करके एक-एक करके पूछते जाइएगा।" विद्वान ने महात्मा के चरण पकड़ लिए हैं कहा, "महाराज! समझ आ गई है मौन रहने में ही सारे प्रश्नों का उत्तर है। मुझे मेरे हर प्रश्न का उत्तर मिल गया है, मुझे अब कुछ नहीं पूछना।"

मौन साधना – देवियो! मौन रहना सीखना सब साधनाओं का परम फल है। आप जितना भी जप करते हो किस लिए, ताकि मन मौन हो सके। इसी को मन का निर्मलीकरण कहा जाता है। इसी को मन का शुद्धिकरण कहा जाता है। सन्त महात्मा प्रायः कहते हैं कि परमात्मा के दर्शन की हर कोई बात करता है, हर कोई चर्चा करता है लेकिन अपने चित्त की शुद्धि की कोई चर्चा नहीं करता, जिसके बिना कभी भी दर्शन नहीं हो सकेंगे आपको। आप कभी भी परमात्मा की सन्निकटता महसूस नहीं कर सकोगी। बू मारने वाले के पास क्यों आएगा परमात्मा? आप अपना भीतर साफ कीजिएगा, शुद्ध कीजिएगा, अंतःकरण की गंदगी निकालिएगा। सड़ान्ध मार रही है भीतर, उस सारी को साफ कीजिएगा तो परमात्मा प्रतिबिंबित होते हैं। मन ऐसा शीशा है जो भीतर है, बिम्ब भी भीतर ही है और बिम्ब हमें दिखाई नहीं देता। शीशे में प्रतिबिम्ब को देखना है तो शीशा साफ करना ही पड़ेगा। उस शीशे पर जो धुंध पड़ी है, जो मैल पड़ी है उसे धीरे-धीरे करके साधना से साफ करते जाइएगा,

माँजते जाइएगा, जैसे ही mirror साफ होता है, जैसे ही शीशा साफ होता है बिम्ब तो अंदर ही है तो सामने प्रतिबिम्ब आपको दिखाई देना शुरू हो जाएगा।

मन को दूध की भी संज्ञा दी जाती है, मन दूध है और संसार पानी है सो आपस में मिलना कोई कठिन नहीं। दूध पानी में बहुत आसानी से मिल जाता है, पानी दूध में बड़ी आसानी से मिल जाता है। दोनों का बहुत तालमेल है, दोनों बहुत आसानी से मिल जाते हैं। सन्त महात्मा फरमाते हैं इसीलिए मन इतनी जल्दी परमात्मा की तरफ नहीं मुड़ता जितनी जल्दी संसार की तरफ मुड़ता है। सजातीय हैं। almost एक ही जाति के हैं ये दोनों, इसलिए तत्काल मन संसार की तरफ मुड़ जाता है। इसको परमात्मा की तरफ मोड़ने के लिए सन्त महात्मा समझाते हैं संसार की तरफ से दूर रखने के लिए, ताकि मन संसार की तरफ न मुड़े और परमात्मा की तरफ ही जुड़ा रहे तो उसके लिए जिस प्रकार दूध को गर्म किया जाता है, ठंडा किया जाता है, जमाया जाता है, दही जमता है, उसको मथा जाता है, मक्खन निकाला जाता है। अब उस मक्खन को आप जितने मर्जी बड़े पानी के बर्तन में रखो वह मक्खन पानी से मिलता नहीं है, तैरता रहता है। संत महात्मा कहते हैं यही साधना है इतनी ही साधना है आपने मन रूपी दूध को मक्खन बनाना है ताकि वह संसार में इस प्रकार मिले न, इसके बिना निर्वाह नहीं है। छोटी-छोटी बातें हैं इन्हें समझना ही होगा और इन्हें धीरे-धीरे अपने जीवन में उतारना होगा। जीवन में उतारने को ही साधना कहा जाता है। यही साधना है। प्रश्न उठता है ये सब बातें तो theoretical बातें थीं प्रैक्टिकल प्रॉब्लम जो हमारी सबकी है वह यह है कि इस मन को मौन कैसे किया जाए? इस मन को नियन्त्रित कैसे किया जाए? इस मन को सिधायी कैसे जाए? हर साधक की समस्या है, हर साधक

के सामने यही लक्ष्य है। ये मन किस प्रकार से मौन किया जाए, किस प्रकार से इसको नियंत्रित रखा जाए, किस प्रकार से इसको अनुशासित रखा जाए, किस प्रकार से इसको अपने अंकुश में रखा जाए, अभी तो हम इसके दास हैं। किस प्रकार से इसको दास बनाया जा सके यह हर साधक की समस्या है, छोटे से लेकर बड़े तक, नए से लेकर पुराने तक। भाग्यवान् हैं वे जिन्होंने इस समस्या का समाधान कर लिया हुआ है। जिन्होंने मन को अपना दास बना लिया हुआ है लेकिन जिनका ये मास्टर है उनको तो नाच नचाता है, उनकी दुर्गति उनको पतन की ओर ले जाता है। कहते हैं जिस प्रकार से पानी का स्वभाव है वह नीचे की ओर जाता है मन का भी स्वभाव है यह आपको पतन की ओर ले जाता है। इसे अधोमुखी कहा जाता है। जब पानी को जो नीचे की ओर बहता है उसे ऊपर चढ़ाना होता है तो एक यन्त्र चाहिए होता है, मोटर लगाते हो उसे यंत्र कहा जाता है। संत महात्मा फरमाते हैं जिस प्रकार नीचे बहते हुए पानी को ऊपर चढ़ाने के लिए यंत्र चाहिए, अधोमुखी मन को ऊर्ध्वमुखी बनाने के लिए मंत्र चाहिए। यन्त्र और मंत्र, याद रखिएगा मंत्र आपके पास है, उस मंत्र के माध्यम से, इस मन को ऊर्ध्वमुखी कैसे बनाया जाए ये हमारी ही कठिनाई नहीं है ये हमारा ही प्रश्न नहीं है। गीता जी के छठे अध्याय में अर्जुन ने भी यही प्रश्न पूछा है। भगवान् श्री, समत्व की चर्चा कर रहे हैं हमारा मन हमारी बुद्धि इस प्रकार की होनी चाहिए। अर्जुन को ये सारी की सारी बातें अस्वाभाविक लगती हैं। दूसरों के सुख में आदमी सुख कैसे महसूस करे, दूसरों के दुःख में आदमी दुःख कैसे महसूस करे। स्वयं के ऊपर दुःख आया है तो आदमी दुःखी कैसे न हो? सुख आया है तो आदमी सुख का अनुभव कैसे न करे? आप माधव कैसी अस्वाभाविक बातें कर रहे हो? यह मेरा मन छोटा है, मलिन है इसलिए मेरा मन

आपकी कही हुई बातों को समझ नहीं पा रहा, मेहरबानी कर के मुझे समझाइएगा। मैं समझता हूँ यह मन का खेल है और मन को समझाना, पढ़ाना, सिधाना, सुधारना बहुत कठिन बात है। जिस प्रकार वायु को अपने वश में करना कठिन है ठीक इसी प्रकार से इस मन को काबू करना, नियंत्रित करना बहुत कठिन है – अति दुष्कर। भगवान् श्री एक अच्छे गुरु की तरह कहते हैं, “पार्थ! जो तू कह रहा है ठीक कह रहा है, शाबाशी देते हैं अपने शिष्य को।” अच्छा गुरु पहले प्रश्न सुनकर तो शाबाशी देता है, हाँ ठीक है पर साथ ही, ‘पर’ लगा देता है। करना क्या है ? पार्थ! तू जो कह रहा है बिलकुल सत्य कह रहा है, महाबाहो कहते हैं, यहाँ पर संबोधन देते हैं, उसे प्रोत्साहित करते हैं, “अरे! तू इतना विशालभुज, महाबाहू, तेरी बाहें इतनी बड़ी बड़ी हैं, तू इतना बलवान् है, तू ठीक कहता है मन को नियंत्रित करना बहुत कठिन है पर असंभव नहीं है। हे महाबाहो! ये असंभव नहीं है मानो जो औरों ने किया है वह तू भी कर सकता है तू तो महाबाहो है।”

भगवान् श्री दो साधन वर्णित करते हैं – एक है अभ्यास और दूसरा वैराग्य। कहीं compromise नहीं है आप मत सोचिएगा कि अभ्यास तो हम कर रहे हैं पर बिना वैराग्य के मन नियंत्रित हो जाएगा यह संभव नहीं है। सारी साधना लंगड़ी लूली रहेगी इन दोनों का होना अपरिहार्य है, नहीं तो भगवान् एक ही कहते। मानो आशीर्वाद का भी इसमें कोई स्थान नहीं है, नहीं तो कहते – मैं बैठा हूँ तुम्हें काहे की चिंता है, अरे मैं तेरा मन अभी नियंत्रित कर देता हूँ मर्यादित कर देता हूँ। नहीं, यह काम हमें ही करना है। इसके लिए आशीर्वादों का भी कोई स्थान नहीं है। हाँ, गुरु महाराज भगवान् कृष्ण की तरह साधन बता सकते हैं, मार्ग दर्शा सकते हैं कि ऐसे ऐसे मार्ग पर चलिएगा। यहाँ यह कठिनाई आएगी, यहाँ यह कठिनाई आएगी उसको पार कीजिएगा।

नाली आएगी, यहाँ पत्थर होंगे, यहाँ कंकड़ होंगे, यहाँ काँटे होंगे इत्यादि-इत्यादि। आपको वहाँ पहुँचना है यही कृपा है, यही आशीर्वाद है। सिर पर हाथ रखने को कृपा, आशीर्वाद नहीं कहा जाता और वहाँ उन आशीर्वादों का कोई स्थान ही नहीं है। अभ्यास एवं वैराग्य दो शब्द भगवान् श्री ने मुख्य कहे हैं। संत महात्मा इनको थोड़ा खोल कर समझाते हैं, जानने की चीज़ तो यही है। ये पाँच बातें क्या हैं, जिनको हमें अपने जीवन में उतारने से इन दो शब्दों की पूर्ति हो जाती है, जिसे अभ्यास और वैराग्य कहा जाता है।

Very important subject for all ages - नाम तो जपते हैं इसमें तो मुझे कभी कोई संदेह ही नहीं है, नाम आप बहुत जपते हो, मैं आपके श्रद्धावनत हूँ, नतमस्तक हूँ जितना आप जाप करते हो काश मैं भी कर सकता। आप इतने उच्च हो बस अपने आप को उच्चतर उच्चतम बनाना है। मन को नियंत्रित, मन को सिधाना भी उतना ही आवश्यक है जितना जप करना। जप तो बल देता है जो करने वाली चीज़ है यदि वह नहीं करते तो फिर वह बल क्या करेगा? आप उसे प्रयोग ही नहीं कर रहे। आप बल तो संचित कर रहे हो लेकिन पड़ा हुआ है आपकी जेब में। आप उसे प्रयोग ही नहीं कर रहे। किन-किन कामों के लिए उन्हें प्रयोग करना है वह तो आप प्रयोग ही नहीं कर रहे हैं तो फिर बल बेचारा क्या करेगा, किस काम आएगा? तनिक आप ही सोचो न, सब बुद्धिमान् व्यक्ति यहाँ बैठे हुए हो, आप पैसे तो इकट्ठे कर रहे हो, होते जा रहे हैं आपके पास कमाई इकट्ठी लेकिन खर्चा कोई नहीं। उन पैसों को कैसे सदुपयोग करना है? वह कर ही नहीं रहे तो इस पैसे का क्या करोगे, क्या काम आयेगा ये आपके, न ही किसी और के काम आयेगा।

परम पूजनीय श्री महाराज जी के प्रवचन  
19.12.2008 ■

# श्रीरामशरणम् - एक ऐतिहासिक विवरण : पलवल

(श्रीरामशरणम् एक ऐतिहासिक विवरण के अन्तर्गत लेखों की अगली कड़ी)



पलवल, हरियाणा में स्थित एक छोटा शहर है। यह राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के तहत आता है और फरीदाबाद से करीब 31 कि.मी. दूर है। पलवल शहर का नाम पांडवों के शासनकाल में शासन करने वाले राक्षस पलवासुर के नाम पर पड़ा है। पलवासुर का वध भगवान् श्री कृष्ण के बड़े भाई बलराम ने किया था।

प्रारम्भ में रामजी की असीम कृपा से पलवल के कुछ साधकों ने परम पूज्य श्री प्रेम जी महाराज जी से दीक्षा प्राप्त करी। फिर उन्होंने मिलकर पलवल के कुछ घरों में श्री अमृतवाणी सत्संग करना आरम्भ किया। कुछ समय तक सत्संग साधकों के घरों में ही होता रहा। परमात्मा की कृपा से पलवल में अनेक साधक श्रीरामशरणम् से जुड़ते चले गए। इन सत्संगों में करीब 60-70 लोग इकट्ठे हो जाते थे।

फिर 1996 में श्रद्धानन्द पार्क, पलवल में पूज्य महाराज श्री डॉ विश्वामित्र जी पधारे। वहाँ सत्संग का भव्य आयोजन किया गया और करीब 250 से 300 साधकों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

उसके पश्चात् साधकों के मन में पलवल में

एक श्रीरामशरणम् बनाने की इच्छा जाग्रत हुई। इसी निवेदन को लेकर कुछ साधक पूज्य श्री महाराज जी से मिले तथा पलवल में श्रीरामशरणम् बनाने की अनुमति माँगी। शुरू में तो पूज्य श्री महाराज जी ने अनुमति नहीं दी परन्तु जब साधकों ने बार-बार प्रार्थना की तो साधकों की उत्सुकता देखकर श्री महाराज जी ने आखिर में अनुमति प्रदान कर दी।

तत्पश्चात् ज़मीन के लिए खोज शुरू हुई और अन्त में कालड़ा कॉलोनी में श्रीरामशरणम् बनाने की लिए उपयुक्त ज़मीन मिली। उसके बाद कालड़ा कॉलोनी में गीता भवन के पीछे 250 वर्ग गज़ का प्लॉट खरीद कर उस पर भूमि पूजन कराया गया तथा निर्माण कार्य शुरू हो गया।

श्रीरामशरणम् बनने के उत्साह में सवा महीने तक कुछ साधकों ने राम नाम का प्रचार और जोरों-शोरों से शुरू कर दिया। वे घर-घर जाते और लोगों को राम-नाम के बारे में तथा राम-नाम की महत्ता के बारे में समझाते तथा आध्यात्मिक मार्ग दर्शन और राम-नाम सिमरन का प्रचार भी करते। उन साधकों ने भक्तों को राम नाम की महिमा और नैतिक जीवन जीने के लिए प्रेरित किया जिससे लोगों में आध्यात्मिक वातावरण को मज़बूत करने में खूब मदद मिली। उन्होंने भक्तों को संतों और भक्तों के दृष्टान्त सुनाकर राम नाम में दृढ़ विश्वास उत्पन्न किया। आखिरकार 2 दिसम्बर 2004 को वो पावन घड़ी भी आ गई जब श्रीरामशरणम् का निर्माण कार्य पूरा होकर उद्घाटन हुआ। 2 दिसम्बर 2004 को परम पूजनीय श्री महाराज जी पलवल पधारे। उनके स्वागत के लिए हजारों भक्त उपस्थित थे।

सबसे पहले अखण्ड जाप तथा हवन प्रारम्भ हुआ जिसमें सभी साधकों ने बढ़-चढ़ कर भाग

लिया। तत्पश्चात् महाराज जी ने हवन कुण्ड में पूर्णाहुति दी व महाराज जी के कर कमलों द्वारा श्रीरामशरणम् आश्रम का पूजन करके शिलालेख का अवलोकन किया तथा सत्संग हॉल में प्रवेश किया। फिर श्री अमृतवाणी का पाठ, प्रवचन, भजन, धुन व आरती हुई। पूरा वातावरण राममय हो गया। पूजनीय महाराज जी ने श्रीरामशरणम् पलवल को सत्संग हेतु समर्पित किया और प्रवचन हुआ।

उद्घाटन के लिए एक भव्य पंडाल का आयोजन किया गया था। श्रीरामशरणम् पलवल में उस समय करीब 25 फुट x 30 फुट का सत्संग हॉल था जो दीक्षा के लिए साधकों से पूरा भरा हुआ था। करीब 250 साधक साधिकाओं ने पूज्य श्री महाराज जी से नाम दीक्षा ग्रहण की। उसके पश्चात् सबने भोजन प्रसादी ग्रहण की। उसके पश्चात् पलवल श्रीरामशरणम् में सुचारु रूप से दैनिक सत्संग होता है।

पलवल श्रीरामशरणम् सत्संग भवन दो मंजिलों का है। पहली मंजिल में मुख्य हॉल है और दूसरी मंजिल पर महाराज जी का कमरा है और एक अन्य हॉल है।

यहाँ प्रातः प्रतिदिन 7 बजे से 8 बजे दैनिक सत्संग होता है। रविवार को गर्मियों में सायं 5 बजे से 6:30 बजे तथा सर्दियों में सायं 4 बजे से 5:30 बजे तक श्री अमृतवाणी संकीर्तन, ग्रन्थ पाठ, भजन तथा प्रवचन होते हैं। इसके अलावा 2 तारीख, 13 तारीख, 29 तारीख तथा पूर्णिमा के दिन का अखण्ड जाप कार्यक्रम होता है।

हर साल एक सप्ताह के लिए 26 नवंबर से 2 दिसंबर तक पलवल श्रीरामशरणम् के उद्घाटन दिवस के अवसर पर एक वार्षिकोत्सव का भी आयोजन होता है। जिसमें प्रातः 7 से 8 बजे तक श्री अमृतवाणी पाठ व भजन होते हैं। उसके बाद शाम 4 बजे तक जाप होता है और फिर से शाम 4 से 5:30 बजे तक श्री अमृतवाणी पाठ व भजन होते हैं। साधक इसमें बहुत भाव-चाव से भाग लेते हैं।

श्री गुरुजनों के आशीर्वाद तथा राम जी की कृपा से सारे कार्यक्रम सुचारु रूप से चल रहे हैं। हम सब साधकों की यही प्रार्थना है कि श्रीरामशरणम् पलवल पर गुरुजनों की असीम कृपा इसी तरह बरसती रहे। ■

आप बीती

## आत्मीय शांति का प्रसाद

8 जून 1980 में मेरी पूज्य माँ का रात माला फेरते फेरते हृदय गति रुकने से स्वर्गवास हो गया। मैं स्पेन से रोते बिलखते दिल्ली आयी। कोई शक्ति मुझे धीरज देने में सफल न हो सकी। मेरी भाभी मुझे परम पूज्य प्रेम जी महाराज के पास श्रीरामशरणम् ले आयी। पूरी बात सुनने के बाद उन्होंने सात्वना भरा आशीष हाथ मेरी पीठ पर रखा। मैं एक दम धैर्यवान् हो गयी और मुझे अत्यधिक शांति का प्रसाद महाराज जी ने दान दिया। कितनी दिव्य शक्ति से ओतप्रोत हैं हमारे गुरुदेव। ■

## रामायण की अलौकिक गूँज

एक बार मैं हॉल में बैठी रामायण जी का पाठ कर रही थी, फिर जाप आरम्भ हो गया तो मैं जाप करने लगी। जाप के शुरू होने से अंत तक मेरे कानों में रामायण के पढ़े जाने की आवाज़ दीवारों से आती रही। मैंने सोचा कि पीछे हॉल में बैठे साधक रामायण ही क्यों पढ़ते जा रहे हैं जबकि भीतर हॉल में जाप आरम्भ हो चुका है ! जैसे ही जाप समाप्त हुआ रामायण पढ़ने की आवाज़ें आनी बंद हो गयी ! मेरे लिए यह एक अद्भुत अनुभूति थी। यह मेरे राम की और गुरुजनों की कृपा स्वरूप ही तो है। ■

## Guru Kripa Knows No Bounds

I am an audiologist and speech and language pathologist by profession. What I am about to share is a first hand experience of Guru Kripa.

It was in 2008. After the Sunday satsang, Maharaj Ji called me and handed me a letter. It was from a sadhak. As I began reading, my heart grew heavy. The letter was soaked in despair.

The sadhak wrote that he suffered from profound stammering. He could not speak even a single sentence properly. He stammered on almost every word. Because of this, he had neither secured a job nor been able to marry. He described himself as living in deep depression, feeling defeated by life.

After I finished reading, Maharaj Ji looked at me and said gently, "You have to treat this sadhak. I am calling him next week." Then he asked, "How much time will it take to cure him?"

As a professional, I knew the gravity of the condition. At 28 years of age, with such severe stammering, even significant improvement is rare. I hesitated and replied softly, "Maharaj Ji... at least six months for any noticeable improvement."

Maharaj Ji laughed — a full, carefree laugh. "He won't be able to stay that long," he said. "I am calling him next Sunday. He will attend satsang and return the same night. You will have a few hours to guide him."

My mind was in turmoil. Everything in me wanted to say, "Maharaj Ji, this is not possible. Even six months may not be enough." But strangely, I could not utter a word. It felt as if my tongue had frozen. I simply bowed and said, "Yes, Maharaj Ji."

The following Sunday, after satsang,

Maharaj Ji introduced me to the sadhak and said, "Take him to your clinic. Begin his treatment. But send him back on time — he has an evening train."

I took him to my clinic. For a few hours, I counselled him. By evening, he left for the station.

The next week, after satsang, Maharaj Ji again called me and handed me another letter. It was from the same sadhak. I began reading — and I was stunned. He wrote that ever since returning from Delhi, he had not stammered at all. Not once. He felt confident, free, and transformed. The despair that once filled his words was gone. In its place was gratitude and strength.

I looked up at Maharaj Ji. He was smiling — softly, knowingly.

I came home that day and tried hard to recall what exactly I had done. What special technique had I used? What profound counselling had I given? I searched my memory repeatedly — but I could not remember anything that I said to him that day.

Then, after some time, another letter arrived. He had secured a job in the Army. Soon after, he got married. In time, he was blessed with two children. From hopelessness to a life fulfilled.

As a clinician, I know what therapy can and cannot do. This was beyond therapy. Maharaj Ji never sought recognition, never wished to be glorified. He simply chose to remain in the background and made me a medium.

The miracle was His. The grace was His. I was only an instrument. Such are our Gurudev. Their kripa is endless. ■

## विभिन्न केन्द्रों पर सम्पन्न कार्यक्रम (दिसम्बर 2025 से मार्च 2026)

### साधना सत्संग, खुले सत्संग एवं नाम दीक्षा का विवरण

- **आलमपुर**, हिमाचल प्रदेश में 21 से 23 दिसम्बर तक तीन दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिस में 125 साधक सम्मिलित हुए। श्री अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन की सभा में संख्या 300 से अधिक रही। 46 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **गुना**, मध्यप्रदेश में 25 दिसम्बर को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के पश्चात् 671 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की और 1500 से अधिक व्यक्तियों ने सत्संग का लाभ लिया।
- **सूरत**, गुजरात में 27 से 28 दिसम्बर को दो दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिस में 74 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **इंदौर**, मध्यप्रदेश में 2 से 5 जनवरी तक तीन रात्रि साधना सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 515 साधक सम्मिलित हुए और 176 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **कल्याणपुरा**, झाबुआ मध्यप्रदेश में 7 जनवरी को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के पश्चात् 4609 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **बोलासा**, मध्यप्रदेश में 8 जनवरी को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के पश्चात् 1831 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **दाहोद**, गुजरात में 9 जनवरी को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के पश्चात् 1948 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **अलीराजपुर**, मध्यप्रदेश में 10 जनवरी को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के पश्चात् 716 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **झाबुआ**, मध्यप्रदेश में 11 जनवरी को 3925 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **झाबुआ**, मध्यप्रदेश में 11 से 13 जनवरी तक तीन दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ।
- **पुणे**, महाराष्ट्र में 17 जनवरी को एक दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिस में 118 साधक सम्मिलित हुए और 48 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **पीलीबंगा**, राजस्थान में 18 से 19 जनवरी तक दो दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिस में 57 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **बानमोर**, मध्यप्रदेश में 22 जनवरी को एक दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ।
- **रोहतक**, हरियाणा में 1 जनवरी से 25 जनवरी तक श्री राम नाम अखण्ड जाप का आयोजन हुआ। 25 जनवरी को 86 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **दिल्ली श्रीरामशरणम्** में 25 जनवरी को 25 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **नीम का थाना**, सीकर राजस्थान, में 26 जनवरी को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के पश्चात् 47 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **फरीदाबाद**, हरियाणा में 26 जनवरी को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के पश्चात् 55 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **बीकानेर**, राजस्थान में 31 जनवरी से 1 फरवरी तक दो दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिस में 47 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **समालखा**, हरियाणा में 1 फरवरी को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के पश्चात् 62 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **गुड़गाँव**, हरियाणा में 6 फरवरी को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के पश्चात् 37 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

- **हाँसी**, हरियाणा में 6 से 9 फरवरी तक तीन रात्रि साधना सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 85 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **मुम्बई**, महाराष्ट्र में 14 से 15 फरवरी तक दो दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिस में 23 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **सरदारशहर**, राजस्थान में 17 से 18 फरवरी तक दो दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिस में 90 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **बांसगहन 'रामतीर्थ'** मध्यप्रदेश में 19 फरवरी को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के पश्चात् 40 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **बिलासपुर**, हिमाचल प्रदेश में 20 से 22 फरवरी तक तीन दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिस में 47 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **बटाला**, पंजाब में 28 फरवरी को एक दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिस में 300 साधक सम्मिलित हुए और लगभग 850 व्यक्तियों ने सत्संग का लाभ लिया। 92 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **अमरपाटन**, मध्यप्रदेश में 1 मार्च को एक दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिस में 111 साधक सम्मिलित हुए और 500 से अधिक व्यक्तियों ने सत्संग का लाभ लिया। 208 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **दिल्ली, श्रीरामशरणम्** में 2 से 4 मार्च तक होली के उपलक्ष्य में तीन दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिस में 732 साधक सम्मिलित हुए। आरती की सभा में 5000 व्यक्ति शामिल हुए।
- **रतनगढ़**, राजस्थान में 7 से 8 मार्च तक दो दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 107 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **हरिद्वार**, में 13 से 16 मार्च तक परम पूजनीय डॉ विश्वामित्र जी महाराज के अवतरण दिवस के उपलक्ष्य में तीन रात्रि साधना सत्संग लगा।
- **झाबुआ**, मध्यप्रदेश में 18 से 27 मार्च तक मौन साधना का आयोजन होगा।
- **फाज़लपुर**, कपूरथला, पंजाब में 21 से 22 मार्च तक दो दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन होगा जिस में 22 मार्च को नाम दीक्षा होगी।
- **नरोट मेहरा**, पंजाब में 26 मार्च एक दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन होगा जिस में नाम दीक्षा होगी।
- **सिरसा**, हरियाणा में 28 मार्च को नाम दीक्षा होगी
- **हरिद्वार**, में 29 मार्च से 3 अप्रैल तक परम पूजनीय स्वामी सत्यानन्द जी महाराज के अवतरण दिवस के उपलक्ष्य में पाँच रात्रि साधना सत्संग होगा।
- **दिल्ली, श्रीरामशरणम्** में 29 मार्च रविवार प्रातः 11 बजे को नाम दीक्षा होगी।

### निर्माणाधीन श्रीरामशरणम् की प्रगति

- **आगरा**, उत्तरप्रदेश में श्रीरामशरणम् के लिए भूमि लेने की प्रक्रिया पूर्ण हो गई है और निर्माण कार्य प्रारम्भ हो गया है।
- **गुना**, मध्यप्रदेश में श्रीरामशरणम् का निर्माण कार्य तीव्र गति से चल रहा है। ■

**चित्रकूट धाम** मध्य प्रदेश में 11 से 14 अप्रैल तक सत्संग समागम हो रहा है जिसमें 12 अप्रैल, रविवार को प्रातः 9:30 बजे श्री वाल्मीकीय रामायण सार से श्री सुन्दरकाण्ड जी की 21 आवृत्तियों का सस्वर पाठ का शुभारम्भ होगा जिसकी पूर्ति 14 अप्रैल मंगलवार को प्रातः 8:45 बजे होगी। 14 अप्रैल, 12 बजे नाम दीक्षा होगी। अधिक जानकारी के लिए website [www.shreeramsharnam.org](http://www.shreeramsharnam.org) पर latest updates में देख सकते हैं। ■

### Sadhna Satsang (April to September 2026)

Haridwar	29 March – 03 April	Sunday to Friday
Haridwar (Jhabua Sadhaks)	09 April – 12 April	Thursday to Sunday
Haridwar (Jhabua Sadhaks)	14 April – 17 April	Tuesday to Friday
Haridwar	30 June – 03 July	Tuesday to Friday
Haridwar	24 July – 29 July	Friday to Wednesday
Haridwar	30 September – 03 October	Wednesday to Saturday

### Open Satsang (April to September 2026)

Hisar	4 - 5 April	Saturday & Sunday
Bhareri	19 April	Sunday
Mandi	26 April	Sunday
Jandiala Guru	3 May	Sunday
Shanag	4 - 5 May	Monday to Tuesday
Kandaghat	10 May	Sunday
Kathmandu - Nepal	21 - 23 May	Thursday to Saturday
Saylorsburg (USA)	28 - 31 May	Thursday to Sunday
Manali	14 - 16 June	Sunday to Tuesday
Lot	23 - 24 June	Tuesday & Wednesday
Rohtak	15 - 16 August	Saturday & Sunday
Rewari	5 - 6 September	Saturday & Sunday
Jalandhar	13 September	Sunday
Hiranagar	15 September	Tuesday
Jammu	18 - 20 September	Friday to Sunday
Gurdaspur	25 - 27 September	Friday to Sunday

### Naam Diksha in Shree Ramsharanam Delhi (April to September 2026)

April	12	Sunday 10.30 AM
May	17	Sunday 10.30 AM
July	29	Wednesday 4:00 PM
August	23	Sunday 10.30 AM

### Naam Deeksha in Other Centers (April to September 2026)

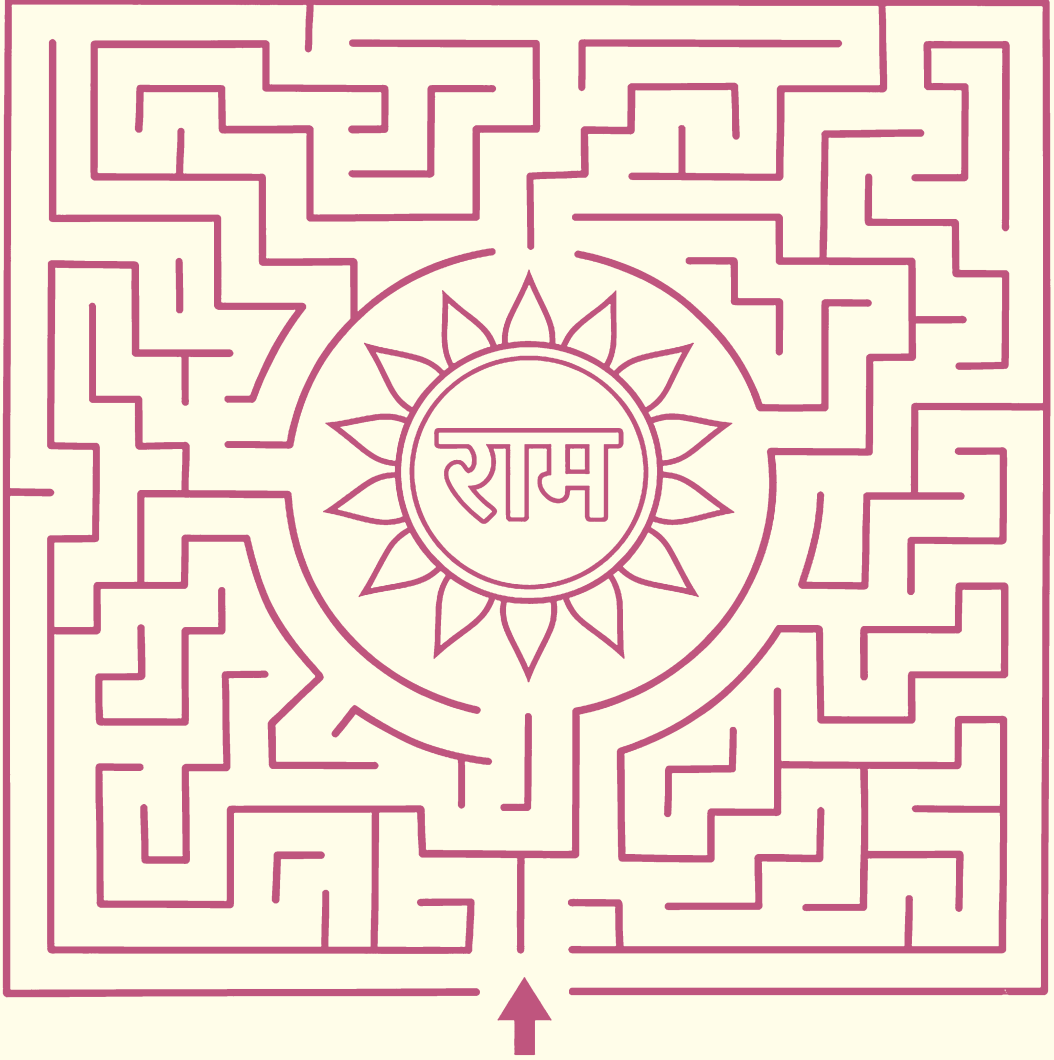
Hisar	5 April	Sunday
Jawali	14 April	Tuesday
Chitrakoot	14 April	Tuesday, 12 Noon
Bhareri	19 April	Sunday
Mandi	26 April	Sunday
Jandiala Guru	3 May	Sunday
Kandaghat	10 May	Sunday
Kathmandu - Nepal	23 May	Saturday
Chambi	24 May	Sunday
Faridabad	25 May	Monday
Saylorsburg ( USA )	28 May	Thursday
Saylorsburg ( USA )	31 May	Sunday
Manali	16 June	Tuesday
Kishtwar	20 June	Saturday
Bhaderwah	21 June	Sunday
Lot	24 June	Wednesday
Ludhiana	30 August	Sunday
Obedullaganj	7 September	Monday
Jalandhar	13 September	Sunday
Hiranagar	15 September	Tuesday
Jammu	20 September	Sunday
Gurdaspur	27 September	Sunday

### Purnima (April to September 2026)

April	2	Thursday
May	1	Friday
May	30	Saturday
June	29	Monday
July (Guru Purnima)	29	Wednesday
August	28	Friday
September	26	Saturday

## Find your way to RAM

Enjoy solving the puzzle and colour in for some added fun.



प्रत्येक दीक्षित साधक का यह कर्तव्य है कि वह सत्य साहित्य पत्रिका खरीदे और उसे संग्रहीत करके अपने पास सुरक्षित रखे ताकि समय-समय पर उसका स्वाध्याय, चिंतन, मनन किया जा सके।

प्रकाशक मुद्रक श्री अनिल दीवान द्वारा श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, 8 ए रिंग रोड, लाजपत नगर-IV नई दिल्ली. 110024 से प्रकाशित एवं रेव स्कैनस प्राइवेट लिमिटेड, 216, सेक्टर-4, आई.एम.टी. मानेसर, गुरुग्राम, हरियाणा-122051 से मुद्रित। संपादक: मेधा मलिक कुदेसिया एवम् मालविका राय

Publisher and printer Shri Anil Dewan for Shree Swami Satyanand Dharmarth Trust, 8-A Ring Road, Lajpat Nagar IV, New Delhi 110024 and printed at Rave Scans Private Limited, 216, Sector-4, IMT Manesar, Gurugram, Haryana-122051. Editors: Medha Malik Kudaisya and Malvika Rai.

©श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, नई दिल्ली

E-mail of Satya Sahitya: srs.satyasahitya@gmail.com

E-mail of Shree Ramsharnam: shreeramsharnam@hotmail.com

वेबसाईट: www.shreeramsharnam.org